ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-86-88, YEAR JUNE 2016

शिक्षा, नैतिक मूल्य एवं साहित्य लेखन

❑ डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार

किसी भी काल परिवे ा में लोकव्यवस्था हेतु सामान्यावस्था की नितान्त आव यकता होती है और यह सामान्यावस्था सामान्यतः कई जीवन्त कारकों पर समाश्रित होती है यथा, तत्कालीन राजनीतिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति आदि जिसके अन्तर्गत साहित्य लेखन की द ाा और दि ाा भी एक आव यक पहलू होता है। वि ोषतः भौक्षिक साम्यावस्था व नैतिक मूल्यों के व्यस्थापन एवं संस्थापन हेतु तो उसकी चरमावस्था व चरम आव यकता होती है। कहने का समग्रतः आ ाय व निहितार्थ यह है कि किसी भी समाज का व्यवस्थित, संगठित व लयबद्ध संचालन का अधिकाधिक समारोपण प्राधान्येन व व्यापकतया साहित्यलेखनाश्रित ही होता है।

साहित्यसर्जक की जैसी मनःस्थिति होगी लेखन व लोक व्यवस्थापन का क्रम भी तदनुरूप होगा। इसी महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए साहित्यकार ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धनाचार्य ने कहा कि :–

अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते वि वं तथेदं परिवर्तते।।

अर्थात् इस अपार काव्यसंसार का निर्माता कवि है, उसकी इच्छा और रुचि के अनुसार ही इस काव्यसंसार की रचना होती है। कवयःक्रान्तद्रश्टा का उद्धोश इसी महत्ता के कारण है। यही नहीं हिन्दी के किसी कवि ने भी इसी बात को प्रकारान्तर से कहा है :

क्लीवों के भारीर में भी, खौल उठता है खून,
त्योरियाँ बदलती हैं, जो ा चढ़ जाता है।
लेकर हथेली पर जान बढ़ता है वीर,
हारी हुई बाजी को तुरन्त पलटाता है।।
तीनों लोक काँपने लगते हैं एक आन में ही,
कवि तू सगर्व जब लेखनी उठाता है।।

उपर्युक्त कविसामर्थ्य तो एक दृष्टान्त हैअगर सही मायने में देखें तो किसी भी स्तर पर चाहे वह राजनीतिक हो, सामाजिक हो अथवा कोई अन्य क्षेत्र, साहित्यकार, रचनाकार, कवि, दा ानिक चाहे जिस नाम से पुकारें, उसकी भूमिका व महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। साहित्य के सामर्थ्य को तत्काल मूल्यांकित या पारिभाषित करना कठिन है परन्तु परोक्ष रूप से उसके अवदान, उपादेयता अथवा योगदान को नजर–अन्दाज करना आसान नहीं है।

बदलते परिवे ा में आज साहित्य का दायरा अत्यन्त विस्तृत हो गया है, उसकी सीमा निर्धारित करना अत्यन्त ही कठिन है। भारतीय परिवे ा में यद्यपि साहित्यलेखन अतीव प्राचीनकाल से ही अपनी मजबूत उपस्थिति में था तथापि आज से अलग अर्थ ही उसकी पहचान थी। हितेन सहितम् इति साहित्यम् अर्थात जो हित के साथ हो, कल्याणवाची हो उसे ही साहित्य की संज्ञा प्राप्त थी।

द ाम् भाताव्दी के आचार्य कुन्तक ने साहित्य की परिभाशा निम्नवत् दी "काव्य मेसौन्दर्याधान के लिए भाब्द और अर्थ दोनों की एकसी मनोहारिणी स्थिति का नाम साहित्य है अर्थात् जैसे सुन्दर भाब्दों का प्रयोग किया जा रहा हो उसी के अनुरूप सुन्दर अर्थ का समन्वय होना चाहिए"

साहित्यमनयोः भाोभा ाालितां प्रति
क ा य स ा ।
अन्यूनानतिरिक्तत्वमनोहारिण्यवस्थितिः।।
वक्रोक्तिजीवितम् 1–17 ।।

यही कारण है कि कुन्तक ने काव्य लक्षण

❑ असिसटेन्ट प्रोफेसर, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती (उ0प्र0) भारत

कविर्व्यापार से युक्त रचना में समुचित रीति से स्थित साहित्ययुक्त भाब्दार्थ का नाम ही काव्य है"

भाब्दार्थौ सहितौ वक्रकविर्व्यापार ालिनि।
बन्धेव्यवस्थितौकाव्यंतद्विदाह्लादकारिणि।
वक्रोक्तिजीवितम् 1–7।।

परन्तु, आज जब समस्त वि व वै वीकृत हो गया है और वि वग्राम की अवधारणा बलवती हो गयी है तो ऐसी परिस्थिति में साहित्यलेखन भी अपने वै िवक रूप में आकृत हो गया है और उसकी चुनौतियां विस्तीर्ण हो गयीं हैं, परिणामतः अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ ि ाक्षा, नैतिक मूल्य के क्षेत्र में आज जबर्दस्त साहित्य लेखन की आव यकता है।

अब स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि नैतिक मूल्य क्या हैं ? उन्हें किस रूप में हम प्रतिपादित करें ? तो इस जिज्ञासा ामनार्थ हम कह सकते हैं कि ये नैतिक मूल्य हमें अच्छाई, सच्चाई, भलाई के रास्ते पर ले चलने वाले पथप्रद ाक व जीवनाधायक तत्व हैं इनके बिना सद्जीवन व सभ्यजीवन की कल्पना नही की जा सकती। सत्यं वद, धर्मं चर, अहिंसा परमोधर्मः, सत्यं ि ावं सुन्दरम् का प्र ास्य स्वरूप हमें साहित्य से ही मिलते हैं, जो सही मायने में नैतिक मूल्य ही नहीं है अपितु नैतिक मूल्य ही सर्वस्व हैं का बोध कराते हैं।

मानव जीवन में ि ाक्षा का स्थान निःसन्देह सर्वोपरि है जिसके द्वारा स्वीकृत, स्थापित, प्र ास्त, उदात्त, अनुकरणीय, अनुसरणीय आचरण करने का वास्तविक ज्ञान मिलता है। आज ि ाक्षा का स्वरूप बहुआयामी हो गया है, नित नये–नये संकल्पनाओं एवं सम्भावनाओं के साथ ि ाक्षा का द्वार विस्तृत होता जा रहा है, जो अपने साथ सकारात्मकता के साथ–साथ नकारात्मकता का भी वातावरण सृजित कर रहा है।ऐसे संक्रमण के दौर में साहित्य लेखन के सम्मुख सर्वथा असाधारण परिस्थिति सृजित होती जा रही है जिस पर अतीव सूक्ष्मता, तार्किकता, वैज्ञानिकता के साथ लेखन सामयिक आव यकता है जिसका निर्वहन एक लेखक, सर्जक के लिए सामयिक चुनौती है। आज एक लेखक को विभिन्नता में एकता, वैशम्यता में साम्यता, अतिवादिता में उदारता, असहिश्णुता में सहिष्णुता, अनैतिकता में नैतिकता, विद्वेश में प्रेमपरकता, साम्प्रदायिकता में पंथ निरपेक्षता, निष्ठुरता में सज्जनता और अन्ततः सामाजिकता, सक्षम मानवता, सजगता, आत्यन्तिक लोकोपकारिता और ऐकान्तिक आध्यात्मिकता का आश्रय लेते हुए विादता, व्यापकता, विराटता, समग्रता, सम्पूर्णता का आश्रय लेते हुए साहित्य लेखन करने की आव यकता है।तभी वि व मानवता विजयिनी हो श्रेयस्कारिणी बन सकेगी जो अन्ततः कल्याणदायिनी स्वरूप में प्रतिश्ठित हो सकेगी।

सामाजिक गति ाीलता के जीवन्त प्रतीक तद्समाज के नैतिक मूल्यों की सक्षम अवस्थिति पर निर्भर करते हैं। आज निरपेक्ष रूप से हम कह सकते हैं कि निःसन्देह भौतिक उन्नति हुई है परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसी अनुपात में बल्कि उससे कहीं अधिक नैतिक मूल्यों का क्षरण भी हुआ है। आजकोई भी व्यक्तिगत या सार्वजनिक जीवन का ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है जहाँ नैतिक गिरावट का परिदृश्य परिव्याप्त न हो। आखिर ऐसा क्यों है ?क्या यह विकास के लिए जरूरी है ?नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि समाज का, व्यक्ति का, राश्ट्र का, वि व का सच्चा वास्तविक विकास नैतिक मूल्यों के सर्वथा संरक्षण, संवर्द्धन के बदौलत ही हो सकता है उसके क्षरण से तो लोक स्थिति ही खतरे में पड़ जायेगी।

ऐसी स्थिति में साहित्यलेखन की भूमिका असंदिग्ध रूप से बढ़ जाती है कि इस प्रकार के साहित्यलेखन प्रारम्भ किया जाये कि मानव को दानव से महामानव, रावणत्व से रामत्व के रूप में रूपान्तरित किया जा सके और यह तब सम्भव हो सकेगा जब उच्च नैतिक मानदण्ड की आधार भूमि व्यक्तिगत

अधिकाधिक वाह्य प्रद र्शन न करके आत्मिक उत्कृश्टता का प्रद र्शन किया जाय, भील, सदाचार,क्षमा, उदारता, भौच की प्रवृत्ति, सहिश्णुता, मानव कल्याण आदि उदात्त व प्र शस्त भावों क स्थिति पर बल दिया जाय, और यह तभी सम्भव है जब साहित्यकार आदि मानवता, नैतिकता, नीतिपरकता, उदारता, जनहितकारिता, सदा यता, मानवीयता आदि श्रेश्ठ भावों को आधार बनाकर साहित्यसर्जना की पृश्ठभूमि तैयार करें। फलतः लोक के लोग भी उत्कृश्ट व श्रेयस्कर मानवीय भावों के अनुसरणक, पथ प्रद र्क, संवाहक, साधक, आराधक बन वि व मानवता को उपकृत व अनुगृहीत कर स क ग ।

*****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वक्रोक्तिजीवितम्– आचार्य कुन्तक
2. काव्यप्रका –आचार्य वि वे वर ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी
3. महाभारत– गीता प्रेस, गोरखपुर
4. भोधपत्रसार– ओरिएण्टलकॉन्फेरेन्स 2008, कुरुक्षेत्र वि वविद्यालय, कुरुक्षेत्र,हरियाणा
5. महाभारत का अर्थ– डी0डी0 हर्श
6. पी0वी0 धर्म ास्त्र का इतिहास– काणे,
7. रामधारी सिंह दिनकर, भारतीय संस्कृति के चार अध्याय–